

ऋग्वेद मन्त्र ज्ञानः इन्द्र और वायु का आवाहन

(ऋग्वेद १.२.६)

वेद हमारे आध्यात्मिक और वैज्ञानिक ज्ञान के मूल स्रोत हैं। आइए आज ऋग्वेद के प्रथम मण्डल, द्वितीय सूक्त के छठे मन्त्र का दर्शन करें, जिसमें आचार्य सायण का यज्ञपरक भाष्य और महर्षि दयानन्द सरस्वती का वैज्ञानिक/आध्यात्मिक दृष्टिकोण दोनों समाहित हैं।

॥ मूल मन्त्र ॥

वायुर्विद्रश्च सुन्वत आ यातमुप निष्कृतं ।
मक्षि॑त्था धिया॑ नरा ॥६॥

॥ पदपाठ ॥

वायो॑ इति॑ । इन्द्रः॑ । च॑ । सुन्वतः॑ । आ॑ । यातम् । उप॑ । निः॑कृतम् ।
मक्षु॑ । इत्था॑ । धिया॑ । नरा॑ ॥६॥

◆ शब्दार्थ (Word Meaning)

- वायो (वायो इति) = हे वायुदेव! / हे प्राण! / हे सर्वव्यापक ईश्वर!
- इन्द्रः च = और हे इन्द्र! / सूर्य का प्रकाश / जीवात्मा ।
- सुन्वतः = सोम रस निकालने वाले यजमान के / रस उत्पन्न करने वाले के ।
- आ उप यातम् = समीप आओ / प्राप्त होओ ।
- निष्कृतम् = भली-भाँति तैयार (संस्कृत) किए हुए सोम के पास / कर्मों के फलों को ।
- मक्षु = शीघ्रता से ।
- इत्था = सत्य रूप में / धारण-पोषण आदि हेतु से ।
- धिया = इस कर्म द्वारा / धारण करने वाली बुद्धि से ।
- नरा = हे नरौ (नेतृत्व करने वाले, सामर्थ्यवान पुरुष)!

♦ आचार्य सायण के अनुसार अर्थ (यज्ञीय एवं आधिदैविक दृष्टिकोण)

हे सामर्थ्यवान (नरौ) वायु और इन्द्र! आप दोनों सोम रस निकालने वाले (सुन्वतः) यजमान के द्वारा भली-भाँति तैयार किए गए (निष्कृतम्) सोम के समीप पधारें (आ उप यातम्) । आप दोनों के यहाँ आ जाने पर हमारे इस यज्ञ-कर्म (धिया) द्वारा शीघ्र ही (मक्षु) सोम का संस्कार सत्य रूप में (इत्था) सम्पन्न हो जाएगा ।

♦ महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार अर्थ (वैज्ञानिक/आध्यात्मिक)

हे सबके अन्तर्यामी ईश्वर! जैसे आपके धारण किये हुए (नरा) संसार के सब पदार्थों को प्राप्त कराने वाले (इन्द्रश्च) अन्तरिक्ष में स्थित सूर्य का प्रकाश और पवन हैं; [यहाँ इन्द्र शब्द से 'जीवात्मा' और वायु शब्द से 'प्राण' का ग्रहण होता है], वैसे ये शीघ्र गमन से (मक्षु) धारण, पालन, वृद्धि और क्षय हेतु से (इत्था) सोमादि सब ओषधियों के रस को (सुन्वतः) उत्पन्न करते हैं । उसी प्रकार शरीर में रहने वाले जीव और प्राणवायु उस शरीर में सब धातुओं के रस को उत्पन्न करके, सब अङ्गों को शीघ्र प्राप्त होकर धारण करने वाली बुद्धि और कर्मों से (धिया) कर्मों के फलों को (निष्कृतम्) प्राप्त होते हैं (आयातमुप) ।

♦ व्याकरण एवं स्वर प्रक्रिया (Grammar Derivation)

पाणिनीय अष्टाध्यायी और निरुक्त के आधार पर पदों की व्युत्पत्ति निम्नलिखित है:

- वायो:** आमन्त्रित होने के कारण 'आमन्त्रितस्य' (पा. सू. ६.१.१९८) सूत्र से यह आद्युदात्त है ।
- इन्द्रः:** 'ऋजेन्द्राग्रवज्र...' (उणादि सू. २.१८६) से 'इन्द्' धातु से रन् प्रत्यय निपातित है । 'नित्यादिर्नित्यम्' (पा. सू. ६.१.१९७) से यह आद्युदात्त है ।
- च:** 'चादयोऽनुदात्ताः' (फिट सू. ८४) सूत्र से यह अनुदात्त है ।
- सुन्वतः:** यहाँ 'शतुरनुमो नदाजादी' (पा. सू. ६.१.१७३) से विभक्ति (अस्) को उदात्त स्वर प्राप्त हुआ है ।
- निष्कृतम्:** महर्षि यास्क के अनुसार 'निरित्येष समित्येतस्य स्थाने' (निरुक्त १२.७) अर्थात् यहाँ 'निः' उपसर्ग 'सम्' के स्थान पर है । 'कृत' शब्द आदिकर्म में कर्ता अर्थ में क्त प्रत्यय (पा. सू. ३.४.७१) से सिद्ध है । समास होने पर पद अन्तोदात्त है ।
- धिया:** 'सावेकाचस्तृतीयादिर्विभक्तिः' (पा. सू. ६.१.१६८) से यहाँ तृतीया विभक्ति उदात्त है ।
- नरा:** सम्बोधन द्विवचन 'औ' को 'डा' (आ) आदेश हुआ है । 'आमन्त्रितस्य च' (पा. सू. ८.१.१९) सूत्र से आष्टमिक निघात (सर्वानुदात्त) स्वर हुआ है ।

♦ मन्त्र विनियोग एवं ऋष्यादि विवरण (Viniyoga & Proof)

ऋषि: मधुच्छन्दा वैश्वामित्र | **देवता:** इन्द्रवायू (इन्द्र और वायु) | **छन्द:** गायत्री | **स्वर:** षड्ज

प्रमाण एवं विनियोग: वैदिक श्रौत परम्परा में अग्निष्टोम आदि सोमयागों में 'प्रउग शस्त्र' (Prauga Shastra) के अन्तर्गत तथा 'ऐन्द्रवायव ग्रह' के ग्रहण में इस मन्त्र (वायविन्द्रश्च सुन्वत इति तृचः) का विनियोग किया जाता है ।

प्रमाण: आश्वलायन श्रौत सूत्र (५.१.०) में प्रउग शस्त्र के विधान में स्पष्ट उल्लेख है— "वायवा याहि दर्शतेमे सोमा अरंकता इति तच्चाः पत्तगम्"